ज़रा सोचो!

जिस भगवान को पाने के लिए तुम अपना सर्वस्व त्याग करने को तत्पर रहते थे, उसे पाकर अब तुम इस संसार में और क्या पाना चाहते हो ? जो परम आनन्द ईश्वरीय मिलन में है वो संसारिक भोगों में कहाँ है ? संसारिक भोग व पदार्थ तो क्षणिक सुख देकर सदा के लिए तृष्णा की अग्नि जलाकर चले जाने हैं। आत्मा कभी भी इन भोगों से तृप्त नहीं होती। उसकी तृष्णाओं की कडी का अन्त नहीं है। इसलिए यदि आत्मा को तृप्त करना चाहते हो तो आत्म-केन्द्रित हो जाओ।

याद करो तुम भक्ति में क्या कहते थे कि हे भगवान, तुम बस एक बार आ जाओ, हम तुम्हारे सिवाय किसी को भी याद नहीं करेंगे! हम तुम्हारे सिवाय अन्य किसी की भी मत पर नहीं चलेंगे! अब स्वयं भगवान तुम्हें वे वायदे याद दिला रहे हैं, तुम्हें उन्हें पूर्ण करना है।

मनुष्यों के साथ रहकर तो तुमने हज़ारों वर्षों तक देख लिया। तुम देवताओं के कुल में भी युगों तक रहे। अब जरा भगवान के साथ रहकर तो देखो! ज़रा सोचो, यह मिलन केवल एक ही बार तो होता है। यदि ईश्वरीय मिलन के इस अमूल्य समय में तुम अन्यत्र व्यस्त रहे तो तुम्हारा भाग्य कैसा होगा ?

ईश्वरीय मिलन का सुख स्वर्ग के सम्पूर्ण सुखों से भी बढ़कर है। देवताओं को भी वो सुख प्राप्त नहीं होगा जो तुम्हें प्राप्त है। सोचो इस सुख से अपने खज़ाने भरने के लिए तुम क्या कर रहे हो ?

याद रहे यदि ये सुख निरन्तर पाना है तो कर्मेन्द्रियों के सुखो का त्याग कर दो। एक ही सुख मिलेगा चाहे ईश्वरीय सुख या कर्मेन्द्रियों का सुख। अच्छी तरह विचार कर लो तुम्हें कौन-सा सुख चाहिए ? तुम्हें ये भी ज्ञात रहे कि कर्मेन्द्रियों का क्षणिक सुख तुम्हारी बुद्धि को स्थिर नहीं होने देगा, कर्मेन्द्रियों का सुख तुम्हें आसक्त करेगा, तुम्हें बन्धन में बाँधेगा। इसलिए इस सुख के पीछे अपनी अविनाशी कमाई को नष्ट न करो।

तुम्हें ये भी याद रहे कि जिन संसारिक प्राप्तियों के पीछे तुम ईश्वरीय सुख से वंचित हो रहे हो, वे प्राप्तियाँ और सम्पत्ति एक सेकण्ड में तुम्हें रोता हुआ छोड़कर तुम्हारा साथ सदा के लिए छोड़ देगी और तब तुम्हारे पश्चाताप की घड़ियाँ बहुत लम्बी होंगी कि काश तुम्हें सद्बुद्धि प्राप्त होती! जरा सोचो जिसे तुमने युग-युग से बुलाया हो और वह सर्व खज़ाने तुम्हारे लिए लेकर तुम्हारे द्वार पर आया हो और तुम्हें कह रहा हो कि लो ये सब खजाने तुम्हरे लिए हैं परन्तु तुम कहीं और व्यस्त हो, उसकी ओर ध्यान न देते हो तो परिणाम क्या होगा ?

इसलिए इस ईश्वरीय सुख को पाने के लिए अन्य सभी सुखों का त्याग कर दो। बाकी सभी सुख तो तुम्हें तीन युगों तक सम्पूर्ण रुप से प्राप्त होते रहेंगे। याद रहे भगवान ने वायदा किया है मैं अपने बच्चों की सभी आवश्यकतायें पूर्ण करता रहूँगा इसलिए ज्यादा भाग दौड़ की जरुरत नहीं। थोड़े में ही सन्तुष्ट रहकर सर्वशक्तिवान से सर्व खजाने प्राप्त करना ही बुद्धिमानी है, जबकि इस विनाशकाल में भौतिक सुखों की कामना रखना अल्प भाग्य की निशानी है।